NBT नवभारत टाइम्स
WEST

ई-क्लॉस कॉन्सेप्ट का आगाज

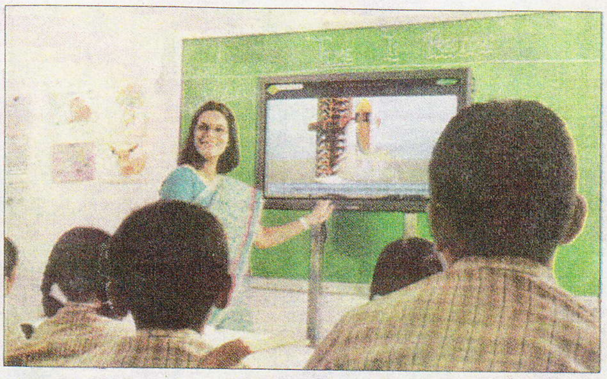

सूर्य पृथ्वी से कितनी दूर है? इसे टीचर क्लॉस में जिस तरह से समझा सकता है, उससे कई गुना ज्यादा प्रभावी तरीके से ई-क्लॉस में समझाया जा सकता है। लेकिन यह एक क्लॉस नहीं है। न ही हमारा उद्देश्य टीचर रहित क्लॉसों को बढ़ावा देना है। ई-क्लॉस का उद्देश्य नोलेज को और ज्यादा बढ़ाना है। यह स्टडी को और ज्यादा प्रभावी बनाने का एक सप्लीमेंट तरीका है। इसमें हरेक सब्जेक्ट के हर चैप्टर को समझाया गया है।

वर्षों पहले स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि यदि आप स्कूल नहीं जा सकते तो स्कूलों को आपके पास आना चाहिए'। सालों बाद यह वाक्य सही हो रहा है।

-मिस सरिता दहिसर में रहती हैं और टीचर हैं। उनका स्कूल वर्सोवा में है। आते-आते कई बार वे लेट हो जाती हैं। यदि आ जाती भी हैं तो दो-दो घंटों की ट्रेवलिंग के बाद उनके शरीर में कोई जान नहीं रह जाती, ताकि पढ़ाई करा सकें।

- यासीन 10वीं में है, लेकिन पढ़ाई में वह कमजोर है। कोचिंग जाना चाहता है, लेकिन महंगा है।

- श्रीधर आईआईटी की परीक्षा दे रहा है और अपनी नोलेज बढ़ाना चाहता है। लेकिन स्कूल में यह संभव नहीं है। वहां सिर्फ सिलेबस तक की पढ़ाई ही होती है। आजकल उस स्टूडेंट्स-टीचर को होशियार माना जाता है जो टेक्नो सेवी हो।

इन सब कमियों से थोड़ा-बहुत निजात दिलाने के लिए ई-क्लॉस का कॉन्सेप्ट अब साकार होने लगा है। अंधेरी पश्चिम के देव प्लाजा से पूरे मुंबई और महाराष्ट्र में स्कूल, कोचिंग क्लॉस, छात्रों और उनके पेरेंट्स तक अब ई-क्लॉस के जरिए शिक्षा पहुंचने लगी है। यह काम कर दिखाया है गुजरात के कच्छ में अनेक स्कूलों, डिस्पेंसरी, मंदिर और धर्मशाला बनवाने वाले सुन्दरम ग्रुप ने। यह ग्रुप महाराष्ट्र में कई सालों से नोट बुक और महाराष्ट्र राज्य बोर्ड की पुस्तकों की प्रिंटिंग करता आ रहा है।

न्यू HORIZON

क्या है ई-क्लॉस कॉन्सेप्ट

इस संस्थान के प्रमुख अमृतभाई के अनुसार, क्योंकि हम इस क्षेत्र में काफी सालों से हैं, इसलिए हमें इस क्षेत्र की कठिनाइयों की नोलेज है। दस साल के गहन रिसर्च के बाद 'ई-क्लॉस' का कॉन्सेप्ट तैयार किया है। हमने ग्राफ, पिक्चर और मनोरंजक रूप से सिलेबस को तैयार कराया है और इन्हें पेन-ड्राइव में समाहित किया है। इन्हें स्टूडेंट अपने घर पर, क्लॉसों में, स्कूलों में दिखा सकता है।

सप्लीमेंट सिस्टम

जैसे रॉकेट क्या है? इसे क्लॉस में टीचर बोर्ड पर समझा सकता है, लेकिन वह उसकी कितनी बड़ी फोटो बना सकता है? वह उसमें मूवमेंट पैदा नहीं कर सकता? लेकिन यह सब हम 'ई-क्लॉस' में कर सकते हैं। ऐसे ही सूर्य पृथ्वी से कितनी दूर है? इसे टीचर क्लॉस में जिस तरह से समझा सकता है, उससे कई गुना ज्यादा प्रभावी तरीके से ई-क्लॉस में समझाया जा सकता है। लेकिन यह एक क्लॉस नहीं है। न ही हमारा उद्देश्य टीचर रहित क्लॉसों को बढ़ावा देना है। ई-क्लॉस का उद्देश्य नोलेज को और ज्यादा बढ़ाना है। यह एक स्टडी को और ज्यादा प्रभावी बनाने का एक सप्लीमेंट तरीका है। इसमें हरेक सब्जेक्ट के हर चैप्टर को समझाया गया है।

high points

- अंधेरी में लोकप्रिय
- 8 से 10 कक्षा के सिलेबस को ई-क्लॉस में डाला
- पर्सनल कम्प्यूटर, लैपटॉप और स्कूल सर्वर जरूरी
- पेन ड्राइव में समाहित
- इंडिया में नया सिस्टम

नोलेज बेस्ड तरीका

लेकिन और भी कंपनियां भी तो यही कर रही हैं, एनआईआईटी या एड्यूकैंप आदि भी तो इसी फील्ड में हैं, उनका जवाब था-हैं, उनका तरीका नोलेज बेस्ड है, जबकि हमारा तरीका सिलेबस बेस्ड है। अर्थात हमने सिलेबस बुक्स फॉर्म हैं, उन्हें मनोरंजक और फिल्मी स्टाइल में इंटरनेट पर डाल दिया है। 'अभी महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड की 8 से 10 कक्षा के सिलेबस को ही ई-क्लॉस में डाला है। हमारी योजना शीघ्र ही अन्य स्टैंडर्ड तक यह सर्विस शुरू करने की है। अभी अंधेरी पश्चिम में सेंट लुईस कॉन्वेंट सहित 35 स्कूलों और कोचिंग क्लॉसों तक ई-क्लॉस पहुंचने लगी हैं। यह शुरुआत ही है और शीघ्र ही हम पूरे महाराष्ट्र में यह सर्विस शुरू कर रहे हैं।

ई-क्लॉस के लिए जरूरी

ई-क्लॉस तभी शुरू की जा सकती हैं, जब आपके पास पर्सनल कम्प्यूटर, लैपटॉप और स्कूल सर्वर हों। हरेक विषय और उसके हरेक चैप्टर एक पेन ड्राइव में होते हैं, जिन्हें एक 'ई-बॉक्स' के जरिए' चलाया जाता है।

न्यू सिस्टम

नहीं। इसकी निश्चित कीमत है, लेकिन हमारा मानना है कि जो कन्टेंट हमने इसमें डाला है और जिस तरीके से समझाया जा रहा है, उसे देखते हुए कीमत बहुत कम लगती है। हमारा टार्गेट एक लाख पेन ड्राइव की मार्केटिंग करने का है। फिलहाल यह सिस्टम इंडिया में नया है। लेकिन हमें अच्छा रेस्पांस मिल रहा है। डिवेलप देशों में इसे बहुत एक्सेप्टेंस मिली है।

● नंदकिशोर भारतीय